महान यज्ञ की अगुआ दादी...

वह मेधा की अविरल धारा थीं। जैसा कि हमारे यज्ञ का नाम शोभायमान है, **राजस्व अश्वमेध अविनाशी रूद्र गीता ज्ञान यज्ञ।** इस यज्ञ की अगुआई एक ऐसी विदुषी सशक्त नारी जिनकी अध्यात्म प्रज्ञा प्रखर थी, ने की। कहा भी जाता है कि नारी में विद्यमान शक्ति को आध्यात्मिकता द्वारा पुनर्जागृत किया जाये तो वह समाज में क्रान्ति ला सकती है। विश्व में नारी शक्ति को संगठित कर एक विशाल कार्य में सहयोगी बना एक स्वर्णिम संसार की रचना में उनकी योग्यताओं को लगाकर दादी ने मानव मन पर एक अमिट छाप छोड़ी है।

दादी जी को ऐसे ही रत्नप्रभा का सम्मान नहीं दिया गया। उन्होंने बाल्यावस्था से ही स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन की संकल्पना के साथ कार्य किया। नारी की अद्‌भुत गरिमा विश्वव्यापी बनाने वाली दादी दिव्य बुद्धि व मेधा की अद्‌भुत मिसाल बनकर उभरीं। उनके लिए ही एक बात दिल से निकलती है कि इतिहास वही लिखते हैं जिनकी मेधा सर्वोच्च व परमात्मा के समीप होती है, साधारण लोग तो सिर्फ उसे पढ़ते हैं। ऐसी दादी को कोई क्यों न अपनी दादी कहे, जिनके जीवन को देखकर ही सबको एक नया जीवन जीने की प्रेरणा मिल जाती।

दादी जी आज सबके मुख पर कुछ प्रेरणास्रोत उदाहरणों के रूप में हमेशा विराजमान रहती हैं। अभी जितने भी वरिष्ठ भाई अथवा बहन जिन्होंने दादी का सानिध्य पाया है, बात-बात में उनके मुख से दादी के लिए सम्मान और महानता के बोल निकलते हैं। उनकी मेधा की परख तो इसी बात से लगाई जा सकती है कि उन्होंने इच्छाओं को, जो दुनिया की सबसे असहज स्थिति है, को पार किया। वे कहतीं, इच्छा चीज़ ही ऐसी है, जो अच्छा है उसे बुरा बना देती है। मनुष्य इच्छा करता है कि मैं अच्छा बनूँ, यह इच्छा भी अच्छा बनने नहीं देती। दादी कहती थीं कि यदि आपको अच्छा का ज्ञान है तो अच्छा नैचुरल बनना चाहिए न कि इच्छा से। मनुष्य इच्छा करता है कि सभी उसे सम्मान दें, प्यार करें और उसके कहने पर चलें, लेकिन इच्छा से सबकुछ नहीं मिलता, हमें वैसी ही अपनी दृष्टि और वृत्ति बनानी पड़ती है। दादी हमेशा दृष्टि, वृत्ति और कृति पर काम करती थीं और कहती थीं कि ये वो चीज़ें हैं जो किसी को नज़र नहीं आतीं लेकिन सेवा का विस्तार इसी से है। यदि हम सभी को प्यार की दृष्टि से देखेंगे तो सभी से प्यार मिलेगा। दादी हमेशा कहती थीं कि जो इस लोक की चिंता करता है वो परलोक का सुख कभी ले नहीं सकता। इसलिए इस लोक को हमें पूरी तरह से भूलना है, लोक लाज को छोड़ना है, तभी परमात्म आँचल का सुख मिलेगा। मुख्य प्रशासिका के तौर पर व्यस्तताओं के बावजूद स्वयं का पुरुषार्थ बनाये रखना और आत्मोन्नति बनाये रखना किसी साधारण व्यक्ति के वश की बात नहीं! दादी की मेधा इस कदर प्रखर थी कि संस्था के सिद्धांतों के अनुरूप कभी किसी के समक्ष हाथ नहीं फैलाया। वह कहतीं, इस बात पर ही तो निश्चय चाहिए, कि कराने वाला अपने आप ही हमसे करवायेगा।

उनकी विवेक शक्ति का एक अनुपम उदाहरण है कि दादी जी ने 16 प्रभागों का गठन किया। जिसमें प्रमुख रूप से शिक्षाविद, युवा, स्वास्थ्य, व्यवसाय, समाज सेवा आदि-आदि शामिल हैं। आज उन्हीं प्रभागों के अंतर्गत अध्यात्म का समन्वय व शोध हो रहा है। यह हमारा व्यक्तिगत अनुभव है कि दादी किसी को भी असंतुष्ट होकर नहीं जाने देती थीं। 2005 में दादी जी को एक बार हम मिलने गये। उसी समय दादी मुरली क्लास से आये थे। अभी बाहर खड़े कुछ भाई बहनों से मिल रहे थे। हम जैसे ही आगे बढ़े तो उनके सेवाधारी भाई बहनों ने हमको रोका। दादी ने जैसे ही हमें देखा तो उनको हटाकर हाथ से इशारा किया। हमें दादी का फोटो लेना था तो दादी ने बड़े प्यार से फोटो खिंचवाया और दृष्टि दी। हमें उस सयम दादी की अहमियत उतनी पता नहीं थी क्योंकि हम बिल्कुल नये थे। आज वे सारे दृश्य जब सामने आते हैं तो दिल खुश हो जाता है।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

दादी हमेशा दृष्टि, वृत्ति और कृति पर काम करती थीं और कहती थीं कि ये वो चीज़ें हैं जो किसी को नज़र नहीं आतीं लेकिन सेवा का विस्तार इसी से है। यदि मैं सभी को प्यार की दृष्टि से देखूंगी तो सभी से प्यार मिलेगा। दादी हमेशा कहती थीं कि जो इस लोक की चिंता करता है वो परमात्म सुख कभी ले नहीं सकता।

दादी जी मेधावी थीं ना, इसलिए उनमें विवेक व भावना का संतुलन था। वे कहती थीं जिस घर में ज़्यादा मेहमान आते हैं, वह घर सबसे अधिक सौभाग्यशाली होता है। वे मेहमान भगवान के बच्चे हैं, पवित्र आत्माएं हैं व इस धरा की अनेक महान विभूतियां हैं। हमें इन मेहमानों की पूरी खातिरदारी करनी चाहिए। वे सच्ची कर्मयोगी थीं, सारे दिन कर्म करके वे ऐसी दिखतीं जैसे कुछ किया ही ना हो। जब जब उनकी चर्चा होती है, लोग उनके किये गये कृत्यों व धारणाओं का ही बखान करते हैं। आज हम छोटे ब्रह्माकुमार कुमारी भी दादी जी का गुणगान करते नहीं थकते। हम तो जब उनके बारे में कुछ लिखते हैं तब भी अपने आप को महान सौभाग्यशाली समझते कि ऐसी महान विभूति के लिए हमारी कलम, हमारी लेखनी उनके द्वारा किये गये कर्मों को लिपिबद्ध कर रही है। इस असार संसार में रहते हुए उन्होंने इस जगत को वो दिया जो एक साधारण मानव की सोच से परे है। हम भी उनके पदचिन्हों पर पूर्णतया चलने की कोशिश करते हैं और करते रहेंगे। वैसे भी दादी कहती थीं कि मैं कुमारों की कुमारका हूँ, तो आज हमें इस बात का भी गर्व होता है कि हम सारे कुमार हैं और हम ऐसे के सानिध्य में हैं जो परमात्मा की अनुपम छवि हैं।

उपलब्ध पुस्तकें

देखिए 'अपना DTH' में फ्री 24 घंटे 'पीस ऑफ माइंड चैनल' ...उसके साथ 100 अन्य चैनल भी फ्री
अपने डी.टी.एच. डिश के डायरेक्शन का करें परिवर्तन...
Satellite Position = 75° East, Satellite = ABS-2
LNB Frequency = 10600/10600, Frequency = 12226/12227
Polarization = H, Symbol = 44000
System = MPEG-2(DVB-S) / MPEG-4(DVB-S2)
FEC = 3/4, 22K = On/Auto, Mode = All/FTA
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें...
8104777111/7014140133

मन की बातें

राजयोगी -ब्र.कु.सूर्य

प्रश्न:- मेरा जीवन बहुत व्यस्त है, मुझे अनेक काम करने पड़ते हैं। मैं चाहता हूँ कि मेरा जीवन योग-युक्त बने, परन्तु कार्य की अधिकता सफल नहीं होने देती, मैं क्या करूँ?

उत्तर:- मनोवैज्ञानिकों ने 'काम' व 'खेल' की परिभाषाओं में अन्तर बताया है। 'काम' वह है जो हमें करना पड़ता है और 'खेल' वह है जो हम खुशी से करते हैं। बस अगर कार्य को खेल बना दिया जाए तो हमारे कार्य सहज हो जाएँ।

एक समर्पित कुमार का ऐसा ही जीवन था। रात-दिन स्टेशन पर तथा हवाई अड्डे पर जाना पड़ता था। कहता था - बहुत व्यस्त हूँ, क्या करूँ? उसे युक्ति बताई गई कि जब भी कहीं जाओ, उससे पूर्व एक, दो या तीन मिनट बाबा के कमरे में योग करके जाओ और बीच में रिक्शा या कार में बैठे हुए भी इधर-उधर न देखकर, योग का अभ्यास ही करो और उसने यही किया। इस प्रकार प्रतिदिन उसका दस बार बाबा के कमरे में जाना हुआ। उसने अपने अनुभव इस प्रकार सुनाये :-

'अब स्टेशन पर आरक्षण के काम सहज हो गये, बाबू लोग प्यार से व सम्मान से कार्य करने लगे, जैसे कि मेरा इन्तज़ार ही करते रहते हों। सब कार्य मानो स्वत: ही होने लगे। यह थी करन-करावनहार परमपिता की कमाल। इस प्रकार मेरा जीवन एक मास में ही आनंद से भर गया। मानसिक व शारीरिक थकान, चिड़चिड़ापन सब समाप्त हो गया'।

पहले जब मैं रात्रि देर से आता था, तो भोजन नहीं होता था, या ठण्डा मिलता था तो गुस्सा आता था। परन्तु अब मन इतना प्रसन्न रहने लगा कि जो भी मिलता है, उसी में आनंद अनुभव होता है। हवाई अड्डे तक आने-जाने में दो घण्टे लगते हैं। अब मैंने इन दो घण्टों को तपस्या का समय समझ लिया, इसा-लिए अब मुझे ऐसा लगता ही नहीं कि मैं योग मिस करता हूँ। इसी सम्बन्ध में मैं अपना एक अनुभव वर्णन करना चाहता हूँ। ऐसे तो मैं प्राय: अकेला ही हवाई अड्डे पर किसी को लेने जाया करता था, और जब आता था, तो थकान महसूस होती थी। एक दिन कोई दूसरा व्यक्ति हवाई अड्डे पर जा रहा था। उसने मुझे कहा -'चलो मेरे साथ' और मैं घूमने के संकल्प से उसके साथ चल दिया। दो घण्टे में जब हम लौटे तो मैं अपने को बहुत फ्रेश व खुशी में अनुभव कर रहा था। अब मेरा विचार चला कि इस तरह जब मैं किसी को लेने जाता हूँ तो उस समय मैं बहुत थकान महसूस करता हूँ और आज इतने समय में मैं स्वयं को बहुत फ्रेश अनुभव कर रहा हूँ। तो मेरी समझ में आया कि रोज़ मैं इसे काम समझता था और आज मैंने इसे घूमने जाना समझा। तो स्मृति के अन्तर से अनुभवों में अन्तर आ गया।

इस प्रकार यदि प्रत्येक कर्म से पूर्व हम थोड़ा भी योग-युक्त होने का अभ्यास करें और कर्म को सहज भाव से खेल की तरह करें तो व्यस्त जीवन भी खेल बन जाए और योग-युक्त स्थिति भी सहज बन जाए।

प्रश्न:- मैं एक गृहस्थी माता हूँ। पाँच वर्ष से योग-अभ्यास कर रही हूँ। मेरे परिवार के सभी सदस्य ज्ञान-मार्ग पर चल रहे हैं। सभी का पूर्ण सहयोग है। मैं चाहती हूँ कि मेरे घर का वातावरण शक्तिशाली बने। क्या विधि अपनाऊँ?

उत्तर:- आप तो पद्मापद्म भाग्यशाली हैं जो सारा परिवार दैवी परिवार है। आप स्वयं घर की मालिक हैं। कुछ सुझाव हैं और कइयों ने इन्हें अपनाकर घर के वातावरण को श्रेष्ठ बनाया है। आप भी दृढ़ता से इनका पालन करें। 1. रोज़ सवेरे उठकर सभी एक साथ बैठकर योग करें। 2. सारा घर का कार्य आपको ही करना होता है तो भिन्न-भिन्न कार्य शुरु करने से पूर्व दो-दो मिनट योग करें। 3.हर घण्टे ईश्वरीय प्यार में मग्न करने वाला एक गीत बजायें। अपने घर के कुछ नियम अवश्य बनायें क्योंकि अब आपका घर मंदिर है और घर में आने वाले मेहमान भी उन नियमों का पालन करें। 4.भोजन का भोग अवश्य लगायें।

5. शाम को या रात्रि को सोने से पूर्व किसी भी समय सभी साथ बैठकर मुरली पढ़कर उस पर चर्चा करें।

6. सोने से पूर्व सभी इकट्ठा बैठकर 15 मिनट योग करें।

इसके अतिरिक्त आप हफ्ते में एक दिन अपनी व्यक्तिगत भट्ठी अवश्य करें। उसमें हल्का भोजन हो, कम बोलना हो, हो सके तो मौन व्रत हो, पढ़ना-लिखना व योग-अभ्यास शामिल हो। इसमें यदि पूरा परिवार सहयोग दे तो अति उत्तम। इससे घर का वातावरण योग-युक्त व शक्तिशाली बनेगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

Peace of Mind
For Cable & DTH +91 8104777111
TATA Sky 1065 airtel 686 videocon 497 RELIANCE 171
"C" Band, MPEG4 DVB-S2 Receiver-FRQ: 4054, POL: H, SYM: 13230, INSAT: 4A, DEG:83°E